Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 10 | OCTOBER 2024

भारत-पाक युद्ध 1971 की पृष्ठभूमि

संदीप बिश्नोई [1] | डॉ. नीलम जुनेजा [2]

[1] शोधार्थी, इतिहास विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज).

[2] शोध निर्देशिका, इतिहास विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज).

ABSTRACT:

जब 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ तब अंग्रेज अपने पीछे दो आजाद मुल्क छोड़कर जा रहे थे। जिसमें से एक था भारत और दूसरा था पाकिस्तान। जैसे ही ये दोनों मुल्क आजाद हुए विभिन्न मुद्दों पर इन दोनों देशों के आपसी विवाद होते रहे हैं, परंतु इन सब में सबसे मुख्य मुद्दा कश्मीर का रहा है। यहाँ हम एक बात पर और गौर करेंगे कि जब पाकिस्तान आजाद हुआ तो वह दो भागों में आजाद हुआ पूर्वी पाकिस्तान एवं पश्चिमी पाकिस्तान। अगर हम भौगोलिक रूप से देखें तो इन दोनों पूर्वी पाकिस्तान और पश्चिमी पाकिस्तान की आपस में सीमा बिल्कुल नहीं लगती थी। ये दोनों विभिन्न भूभाग थे। पश्चिमी पाकिस्तान की भारत के पश्चिम में गुजरात, राजस्थान, पंजाब, कश्मीर आदि से सीमा लगती थी। जबकि पूर्वी पाकिस्तान की सीमा पश्चिम बंगाल त्रिपुराआदि राज्यों से लगती थी।

KEYWORDS:

-

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
28th October 2024	31st October 2024

भूमिका

आजादी के बाद और 1971 के आने से पहले पहले भारत और पाकिस्तान के बीच दो युद्ध हो चूके थे। आजादी के वक्त कश्मीर एक ऐसा मुद्दा था जिसपर दोनों देश अपना अपना दावा प्रस्तुत कर रहे थे। परन्तु कश्मीर रियासत ये फैसला नहीं कर पा रही थी कि वह किस देश के साथ जाए अथवा आजाद रहे। इसी समय अक्टूबर 1947 कोपाकिस्तानी सेना की मदद से कबीलाई लोगों ने कश्मीर पर हमला कर दिया। इस हमले को देखते हुए रियासत के महाराजा हरिसिंह ने कश्मीर का विलय भारत में कर दिया। और यह भारत और पाकिस्तान के बीच पहले युद्ध की शुरुआत थी। भारतीय सेना को कश्मीर एवं कश्मीरियों की सुरक्षा के लिए इस युद्ध में भाग लेना पड़ा। आर जैसे ही भारतीय सेना श्रीनगर पहुंची उन्होंने कबायलियों को पीछे खदेड़ना शुरू कर दिया। इसी दौरान भारत सरकार ने एक और बड़ा कदम उठाया और 31–12– 1947 को संयुक्तराष्ट्र संघ में अध्याय छः के तहत कश्मीर मुद्दे पर शिकायत दर्ज करवा दी। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 अप्रैल 1948 को एक संकल्प पत्र जारी किया, जिसमें मुख्यतः तीन बिंदु थे।

(क) सीज फायर आदेश

(ख) युद्ध विराम समझौता

(ग) अन्य।

परन्तु सीजफायर आदेश को 31 दिसंबर 1948 को माना गया और इसी दिन युद्ध विराम हुआ। दोनों पक्षों की सेनाएँ जिस स्थान पर थी, उस स्थान को नियंत्रण रेखा मान लिया गया जिसके उत्तर दिशा में जो कश्मीर का हिस्सा था। उसे पाक अधिकृत कश्मीर मान लिया गया।

दूसरा युद्ध सन् 1965 में हुआ। उस समय भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी थे।1965 की गर्मियों के बाद पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। पाकिस्तान के उद्देश्य पंजाब के साथ साथ कश्मीर पर भी कब्जा करना था। भारत ने इस युद्ध का कड़ा उत्तर दिया। पाकिस्तान को पराजय का मुँह देखना पड़ा। प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी सोवियत संघ की मध्यस्थता से पाकिस्तान के साथ समझौता करने के लिए ताशकंद गए। 10 जनवरी 1966 को पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खां और लाल बहादुर शास्त्री ने समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये। समझौते में यह कहा गया था कि दोनों देशों ने जो जिन जिन इलाकों पर कब्जा किया है उनको वे खाली कर देंगे एवं दोनों देश 5 अगस्त के पूर्व की स्थिति में लौट जाएंगे।

हम देखते हैं कि 1971 से पहले भारत और पाकिस्तान के बीच दो युद्ध हो चूके थे दोनों युद्ध का मूल कारण अगर देखा जाए तो कश्मीर मुद्दा ही मुख्य बिंदु के रूप में सामने आता है।

युद्ध से पूर्व भारत व पाकिस्तान में चुनाव।

आजाद भारत में पहले आम चुनाव 1952 में हुए थे। फिर इसके बाद यह श्रृंखला चलती रही। जैसे कि 1957, 1962, 1967 मैं भारत के लोकसभा और विधानसभा चुनाव होते रहे। 1967 के चुनाव के बाद देश के प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी थीं।परन्तु उस समय कांग्रेस के अंदर दो गुट बन चूके थे। एक इंदिरा गाँधी का गुट और एक गैर इंदिरा गाँधी का गुट। भारत में अगले चुनाव 1972 को होने थे। परन्तु श्रीमती इंदिरा गाँधी ने लोकसभा चुनाव 1971 में ही करवाने का फैसला लिया। हालांकि अभी सरकार के कार्यकाल में 14 महीने का समय बचा हुआ था। इसके पीछे महत्वपूर्ण दो कारण थे। सबसे पहले कारण तो उनकी पार्टी कांग्रेस (आर) जनता का बहुमत चाहती थी ताकि वो प्रगतिशील सुधारों को लागू कर सके। जिसे प्रतिक्रियावादी ताकतों ने रोक रखा था। और दूसरा इस समय से पहले लोकसभा और राज्य विधानसभा चुनाव एकसाथ हुआ करते थे। दोनों चुनाव साथ साथ होने की स्थिति में जाति और नस्लीयता की संकीर्ण भावना राष्ट्रीय मुद्दों को प्रभावित कर देती थी। इसलिए श्रीमती गाँधी ने बड़ी चतुराई से लोकसभा चुनाव समय से पहले करवाकर अपने आप को विधानसभा चुनाव से दूर कर लिया। इस समय विपक्ष की कई पार्टियों ने मिलकर महागठबंधन का निर्माण किया तथा अपना नारा दिया। "इंदिरा हटाओ" और इसी के विपरीत इंदिरा गाँधी जी की पार्टी का नारा था "गरीबी हटाओ"

बहरहाल, दिसंबर 1970 के आखिरी सप्ताह में लोकसभा भंग कर दी गई और भारत में चुनाव घोषित हो गए। साल 1971 के शुरुआती महीनों में चुनाव करवाए गए और चुनाव के नतीजों में इंदिरा गाँधी को भारी बहुमत। प्राप्त हुआ। लोकसभा की कुल 518 सीटों में से कांग्रेस (आर) जो कि इंदिरा गाँधी की कांग्रेस थी को 352 सीटों पर जीत हासिल हुई और जबकि दूसरे नंबर पर। आने वाली

सीपीएम को महज 25 सीटेंहीमिलपाई।

भारत में हुए इन चुनावों स महज तीन महीने पहले पाकिस्तान में पहली बार व्यस्क मताधिकार के आधार पर चुनाव करवाए गए थे। यह चुनाव पाकिस्तान के राष्ट्रपति और सैनिक शासन के प्रमुख प्रशासक जनरल याह्या खान ने करवाए थे। इन चुनावों में पाकिस्तान की दो पार्टियां आमने सामने थीं। एक थी पश्चिमी पाकिस्तान की जुल्फिकार अली भुट्टो की पाकिस्तान पीपल्स पार्टी। वहीं दूसरी तरफ पूर्वी पाकिस्तान के शेख मुजीबुर्रहमान की पार्टी। नेशनल अवामीलीग। दोनों पार्टियों के चुनाव प्रचार के मुददे अलग अलग थे। पाकिस्तान पीपल्स पार्टी का मुद्दा था, हर एक पाकिस्तानी को रोटी, कपड़ा और मकान जैसी सुविधाएं प्रदान करवाना। जबकि नेशनल अवामीलीग पूर्वी पाकिस्तान के शोषण, बांग्ला भाषा के दमन और पश्चिमी पाकिस्तान के सैनिक शासकों द्वारा इसके प्राकृतिक संसाधनों के दोहन को अपना मुद्दा बना रही थी। पाकिस्तान में दिसंबर 1970 के तीसरे सप्ताह में चुनाव करवाए गए। पाकिस्तान पीपल्स पार्टी को पश्चिमी पाकिस्तान की 144 में से 88 सीटों पर जीत हासिल हुई जबकि आवामीलीग ने ज्यादा आबादी वाले पूर्वी पाकिस्तान की 169 में से 167 सीटें जीत लीं। ये चुनावी नतीजे सभी को चौंकाने वाले थे। यहाँ तक कि इन नतीजों से शेख मुजीब को भी ताज्जुब हुआ। जबकि याहिया खान निराशा में डूब गए।

चुनावों के बाद की परिस्थितियां

पूर्वी पाकिस्तान एवं पश्चिमी पाकिस्तान दोनों का अगर बारीकी से अध्ययन किया जाए तो केवल एक धर्म को छोड़कर बाकी बहुत से मामलों में दोनों के अंदर जमीन आसमान का अंतर था। पूर्वी पाकिस्तान में बांग्ला बोलने वाले लोग रहते थे। जबकि पश्चिमी पाकिस्तान में उर्दू जबान बोली जाती थी। दोनों इलाकों में तहजीब और रहन सहन का खासा फर्क था। पूर्वी और पश्चिमी हालांकि दोनों ही एक मुल्क थे परंतु दोनों के बीच 2000 किलोमीटर का फासला था। ओर चाहे नौकरशाही हो या फौज,पढ़ाई लिखाई हो या सरकारी नौकरी हो हर जगह पश्चिमी पाकिस्तान के लोगों का दबदबा था, पाकिस्तान के दोनों हिस्सों पश्चिमी पाकिस्तान एवं पूर्वी पाकिस्तान का संबंध साम्राज्य और उपनिवेश जैसा था। जिसमें पश्चिमी पाकिस्तान सैनिक, आर्थिक और यहाँ तक की सांस्कृतिक रूप से भी पूर्वी पाकिस्तान पर बुरी तरह हावी था। इन हालातों में यहया खान एवं जुल्फिकार अली भुट्टो दोनों यह कतई बर्दाश्त नहीं कर सकते थे कि कोई बंगाली उनके भाग्य का फैसला करें। दूसरी तरफ पूर्वी पाकिस्तान के मुसलमान पश्चिमी पाकिस्तान को न केवल शासक वर्ग बल्कि शोषण करने वाला शासक वर्ग मानता था। जनवरी 1971 में यहया खान एवं जुल्फिकार अली भुट्टो ने पूर्वी पाकिस्तान की राजधानी ढाका का दौरा किया। उन्होंने शेख मुजीब से भी मुलाकात की परंतु शेख इस बात पर अड़े रहे कि यहाँ पर संघीय संविधान हो परंतु इस बात पर कोई समझौता नहीं हो सका और। राष्ट्रपति याहया खान ने नेशनल असेंबली की बैठक ही नहीं बुलाई। इन सब बातों को मद्देनजर रखते हुए अवामीलीग ने अनिश्चितकालीन हड़ताल की घोषणा कर दी। पूरे पूर्वी पाकिस्तान में दकानों एवं कार्यालयों पर ताला लगा दिया गया। यहाँ के रेलवे स्टेशन, हवाई अड्डे भी बंद कर दिए गए। सेना ने इस विरोध को ताकत के बल पर कुचलने का फैसला किया।सेना ने ऑपरेशन शुरू किया, जिसे कहा गया ऑपरेशनसर्चलाइट। 25–26 मार्च के आसपास सेना ने ढाका यूनिवर्सिटी पर घातक हमला किया, दर्जनों टैंक यूनिवर्सिटी कैंपस में घुस गए। छात्रावासों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी गयी। इन्हीं सब हालातों के बीच उसी रात शेख मुजीबुर्रहमान को गिरफ्तार कर लिया गया और हवाई जहाज से पश्चिमी पाकिस्तान में किसी अज्ञात जगह पर भेज दिया गया। बांग्लादेश की सरकार पाकिस्तानी सेना के दमन में मारे जाने वालों की तादाद 30,00,000 बताती है। जबकि कुछ विश्लेषक कहते हैं कि मारे जाने वालों की असली तादाद का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है लेकिन किसी भी हाल में। 3,00,000 से कम लोगों की हत्या नहीं हुई थी। इन सब अत्याचारों से बचने के लिए पूर्वी पाकिस्तान के लोग हिंदुस्तान की ओर भागे। भारत के पश्चिम बंगाल, असम, त्रिपुरा, बिहार राज्यों की तरफ इनका पलायन शुरू हुआ। लगभग 10,00,000 लोग हिंदुस्तान में शरण लेने के लिए पहुंचे। भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाधी के सामने दोहरी चुनौती थी। एक तरफ शरणार्थियों की वजह से भारत पूर्वी राज्यों को किसी भी तरह के सम्प्रदायिक तनाव से बचाना और दूसरी तरफ इन शरणार्थियों के रहने और खाने की व्यवस्था करना। और यह समस्या भारत सरकार के काबू से बाहर होती जा रही थी।

जैसे ही इंदिरा गाँधी देश के प्रधानमंत्री बनी उन्हें यह पहले से ही समझ में आ गया था कि देश की आर्थिक हालात एवं पूर्वी इलाके में शरणार्थी समस्या का समाधान केवल एक ही तरीके से हो सकता है और वह है पूर्वी पाकिस्तान का स्थायी समाधान। 25 अप्रैल 1971 का। उन्होंने कैबिनेट की मीटिंग बुलाई और उस मीटिंग में केंद्रीय मंत्री ही नहीं बल्कि थल सेना प्रमुख जनरल मौनिक शाह भी शामिल हुए। मीटिंग शुरू होते ही श्रीमती इंदिरा गाँधी ने त्रिपुरा, असम, पश्चिम बंगाल राज्यों की गंभीर शरणार्थी समस्या से अवगत करवाया। श्रीमती गाँधी ने इस गंभीर समस्या का स्थायी समाधान निकालने पर जोर दिया परन्तु सेना प्रमुख जनरल मानिक शाह ने यह साफ शब्दों में कहा कि यह समय युद्ध के लिए उपयुक्त नहीं है क्योंकि अप्रैल महीने में हिमालय के सभी रास्ते खुल जाते हैं इस वजह से हमें चीन से खतरा हो सकता है। ओर बस जब तक हम लड़ाई के लिए तैयार होंगे तब तक पूर्वी पाकिस्तान में मानसून दस्तक दे चुका होगा और नदियां उफान पर आ जाएगी। इसलिए युद्ध के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है। 25 अप्रैल की उस मीटिंग में ये है तो लगभग तय हो गया था कि पूर्वी पाकिस्तान में जो कुछ भी हो रहा है, उसके लिए भारत चुप नहीं बैठेगा। युद्ध की तैयारी के खुले आदेश भारत की सेना को मिल चूके थे। अब एक ही सवाल रह गया था की युद्ध कब होगा और इसकी पहल कौन करेगा

इसी दौरान भारत सरकार ने वरीष्ठ केंद्रीय मंत्रियों को यूरोप और अफ्रीकी देशों के दौरे पर भेजा गया ताकि ये देश दुनिया को बता सकें कि भारत के लिए शरणार्थी समस्या कितनी गंभीर हो चुकी है और भारत इसे सुलझाने के लिए क्या कर रहा है। प्रधानमंतइन्दिरा गाँधी ने दुनिया के नेताओं से पत्र लिखकर भी अपील की कि वे वेपाकिस्तानी सेना के अत्याचार पर रोक लगाएं

निष्कर्ष

उपरोक्त दर्शाई गई परिस्थितियों को देखते हुए यह आभास हो जाता है कि भारत और पाकिस्तान के 1971 के युद्ध के लिए पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी थी। 1970–71 में दोनों देशों में चुनाव, पूर्वी पाकिस्तान में आंदोलन, भारत में शरणार्थी समस्या एवं भारत के विदेशी शक्तियों से सम्बन्ध तथा उनके सामने पूर्वी पाकिस्तान पर हो रहे अत्याचार की तस्वीर पेश करना, ये सब कारण भारत–पाकिस्तान युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए पर्याप्त थे।

REFERENCES

1. "ए स्पेशलकोरेस्पॉन्डेंट", "मेकिंग ऑफ फिफ्थ लोकसभा" थॉट 20 मार्च 1971
2. खुशवंत सिंह, इन्दिरा गाँधी, इलस्ट्रेटेडवीकली ऑफ इंडिया, 14 मार्च 1971
3. रामचन्द्र गुहा "भारत नेहरू के बाद" (पेंगुइनबुक्स द्वारा प्रकाशित) अध्याय तीन
4. अनाम व्यक्तियों द्वारा संग्रहित चश्मदीदों की रिपोर्ट, बांग्लादेश डॉक्यूमेंट्स, (मद्रास द बीइनके प्रेस, 1972) अध्याय छः।
5. आर.के.दासगुप्ता, रिवोल्ट इन ईस्ट बंगाल (कलकत्ताः जी.सी.रे, 1971) पृष्ठ 4, 7, 9, 21, 24, 29, 39, 52, 61 इत्यादि।
6. पी.एन.केबमजईः हिस्टरी ऑफ कश्मीर, मेट्रोपॉलिटन, नई दिल्ली, 1973, पृष्ठ 822
7. रामचन्द्र गुहा "भारत नेहरू के बाद" (पेंगुइनबुक्स द्वारा प्रकाशित) पृष्ठ 81।